मानवताका मार्ग-अणुव्रती संघ



[मुनि श्री बुद्धमलजी]

अप्रैल, १९५२

मनुष्य अन्य प्राणियोंकी अपेक्षा अधिक बुद्धिशाली प्राणी है। उसमें अनेक अवगुण हैं जरूर, किन्तु उसके पास वह शक्ति भी विद्यमान है जिससे वह अपने समस्त अवगुणोंका स्वयं या किसीके बतानेपर परित्याग कर सकता है। प्रत्येक अवगुण मनुष्यकी महत्ताका कट्टर शत्रु होता है तो मनुष्यको भी प्रत्येक अवगुणका कट्टर शत्रु होना ही चाहिये; जिस दिन ऐसी भावना मनुष्यमें जागृत हो जायेगी उस दिन मनुष्य अपना गुरु आप ही होगा। किसीको मार्ग-प्रदर्शन करनेकी आवश्यकता तक नहीं होगी; किन्तु अभी तो ऐसा नहीं है।

आज तो इसमें अवगुण एकत्रित होते जा रहे हैं। गुणको पहचानने और स्वीकार करनेवाले तो विरले-से ही दिखाई देते हैं। अधिकांश तो अपने अवगुणों को भी गुण मान बैठे हैं। अवगुण और गुणका भेद-ज्ञान लुप्त सा हो गया है। ऐसा लगता है, मानो थोड़े ही दिनोंमें यदि ऐसी परिस्थिति चालू रही तो अवगुण गुण रूपमें और गुण अवगुण रूपमें परिणत हो जायेंगे। किन्तु मेरा विश्वास है, ऐसा हो नहीं सकता, कम-से-कम भारतमें तो कभी नहीं। यह ऋषि-भूमि है, इसमें समय-समयपर अनेक महापुरुषोंने तथा ऋषियोंने अपने जीवनके अमूल्य अनुभवोंसे उपदेशकी गङ्गा बहाई है। यह वह भूमि है, जहां जगत्‌की प्रत्येक गुत्थीका हल निकाला गया है और उत्पथगामी संसारको सत्पथपर लानेका सफल प्रयत्न किया गया है।

यद्यपि आज ऐसा अनुभव हो रहा है कि यहां अनेक प्रकारके अवगुणोंकी अभूतपूर्व बाढ़ आ गई। मद्य, मांस, द्यूत, व्यभिचार, तमाखू आदि व्यसन घटते

नहीं मालूम होते, काला-बाजार मुंह बाये सब कुछ अपनेमें समा लेना चाहता है; खाद्य-पदार्थोंकी अनुचित मिलावट मनुष्यको जीवित ही मार देना चाहती है; परिग्रहकी भावना समुद्रसे भी होड़ लगा रही है; अधिकारकी दुराशा आकाशके भी कहीं ऊपर अपना आसन जमानेकी टोहमें है; ऐसे समयमें इस पावन धरातलको इन जघन्य कृत्योंसे दूषित होनेसे बचानेके लिए तीव्रगतिसे प्रतिकार भी प्रारम्भ हो गया है। यह प्रतिकार मानवी वृत्तिसे दानवी वृत्तिका, विरक्तिसे आसक्तिका, समतासे विषमताका, सन्तोषसे संग्रहका और त्यागसे भोगका प्रतिकार है। इसके उन्नायक आचार्य श्री तुलसी हैं और इसका फल अणुव्रती संघ है।

अणुव्रती क्यों ?

अणुव्रतीका अर्थ होता है—छोटे व्रतोंको धारनेवाला। व्रत और छोटे, यह बात सम्भवतः आपको कुछ अखरे, क्योंकि कोई भी व्रत छोटा नहीं, बहुत बड़ा होता

है। उसे लेनेवाले व्यक्तिपर कितना दायित्व आ जाता है, इसे सोचनेपर यह जाना जा सकता है कि छोटा कहा जानेवाला व्रत भी वास्तवमें कितना महान् और कितना दुरूह होता है। किन्तु जब हम महाव्रतकी ओर ध्यान देते हैं तो स्वतः यह समझमें आ जाता है कि छूट सहित लिया गया कोई भी व्रत महान् होते हुए भी महाव्रतकी कोटिमें नहीं आ सकता। अतः उसका नाम अणुव्रत और उसे स्वीकार करनेवालेका नाम अणुव्रती उपयुक्त ही है।

"सर्वनाशे समुत्पन्ने, अर्धं त्यजति पण्डितः" के नियमसे महाव्रतोंको पालनेमें असमर्थ व्यक्ति अणुव्रत तो अवश्य ग्रहण करें। क्योंकि ये गृहस्थ-जीवनके मौलिक नियम हैं, मानवताके उन्नायक हैं। जब तक मानवताकी ओर मानवका ध्यान आकृष्ट नहीं होता, तब तक जीवनकी नाव डांवाडोल ही रहती है, अणुव्रती बनना अपनी नावके डांड़को चलाना है, उस पार जानेको अग्रसर होना है, लक्ष्यके निकट पहुंचनेको आगे बढ़ना है। अणुव्रत मनुष्यताकी ओर प्रस्थान करनेवालोंका सरल

मार्ग है, मानवतारूप अणुओंको देखनेका अणु-वीक्षण है। इसपर विवेककी आँख लगाकर इन अणुओंको कोई भी पहचान सकता है, संगृहीत कर सकता है और जीवन-निर्माणकी मूलभित्तिमें प्रयुक्त कर सकता है।

अणुव्रती संघके नियमोंको पढ़कर यह सरलतया अनुभव किया जा सकता है कि मनुष्यने जहाँ-जहाँ मानवतापर आघात किया है, वहाँ-वहाँ ये नियम औषधि का काम करते हुए घावोंका संरोहण करते हैं और चिर-मूर्च्छित मानवताको पुनः सचेत कर देते हैं।

कैसे निभा सकते हैं ?

कुछ मनुष्य यह आशङ्का करते हैं कि सारा संसार ही जब चोर-बाजार, भ्रष्टाचार और दुर्व्यसनोंमें फँसा है तो चन्द मनुष्य अणुव्रती बनकर अपनी सत्यता कैसे निभा सकते हैं ? इसका संक्षेपमें यही उत्तर हो सकता है कि दिक्कत तो अस-

त्यता निभानेमें ही आ सकती है, सत्यता निभानेमें नहीं, कठिनता उल्टे पाँव चलनेमें ही हो सकती है, सीधे पाँव चलनेमें नहीं। उचित तथा समान आहारसे रोगका भय कहां ? वह तो शक्तिप्रद ही होता है। सत्य स्वयं स्पष्ट होता है अतः उसे सिद्ध करनेके लिए दाँव-पेचोंकी आवश्यकता नहीं, स्वयं प्रकाशित दीपका अस्तित्व सिद्ध करनेके लिए अन्य प्रकाशकी आवश्यकता ही कब होती है ?

सत्यता आत्माका धर्म है, उसके लिए दूसरेका सहारा अपेक्षित नहीं है, दृढ़तापूर्वक अपने निर्णीत मार्गपर चलते रहना ही ध्येय होना चाहिये, जिससे सारी सम्भावित कठिनाइयां स्वतः दूर हो जाती हैं। सफलता संख्यापर नहीं, भावनापर निर्भर है। चन्द व्यक्ति भी सच्ची भावनासे अणुव्रती बनकर दुनियाँको वह पाठ पढ़ा सकते हैं, जो विस्मृतिके गर्त्तमें पड़ा रहा और दुनिया उसे बाहर खोजती रही। संसारके प्रायः सभी सुधार थोड़े व्यक्तियोंसे ही प्रारम्भ हुए हैं ; अधिक व्यक्ति तो उनके विरोधमें रहे हैं क्योंकि विचारशील और स्वार्थत्यागी मनुष्य अपेक्षाकृत

सदैव थोड़े ही होते हैं। यहां हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि अणुव्रतियोंकी संख्या कम रहनी चाहिये, किन्तु यह है कि संख्याको सफलतामापकयन्त्र नहीं मानना चाहिये।

एक वर्षके लिये क्यों ?

एक यह आशंका भी सामने आती है कि जिन व्यक्तियोंने अणुव्रत स्वीकार किये हैं, उन्होंने एक वर्षके लिये ही क्यों किये हैं ? इसके लिये यों कहा जा सकता है कि अनादि कालीन मानवी दुर्बलताओंको हटानेके लिये कुछ समय चाहिए, यद्यपि आत्मामें अनन्त शक्ति विद्यमान है तथापि उसका विश्वास सहसा हरएक नहीं कर सकता, विश्वास करने पर भी उसका प्रयोग करते समय झिझक स्वाभाविकतया हो ही जाती है। एक दो बार प्रयोग करने पर विश्वास बढ़ जाता है, संकोच दूर हो जाता है और कार्य स्वतः सुगम प्रतीत होने लगता है। अणुव्रती

बननेवाले व्यक्ति जिस वातावरणमें रहे हैं, जैसे संस्कारों से संस्कृत हुए हैं, उन्हें देखते हुए हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उनकी यह झिझक निस्कारण नहीं है। आचानक भावावेशमें किया गया कार्य सम्भवतः कहीं-कहीं पश्चात्तापका कारण बन सकता है किन्तु समझकर और ठीक देखकर किया गया कार्य शक्तिदायक एवं हर्षोत्पादक होता है, अतः अणुव्रती एक वर्षमें अपने आपको अच्छी तरहसे कस लेंगे और आगामी अवसर पर जीवन पर्यन्त व्रत लेलेंगे, ऐसी सम्भावना है। इनमेंसे कुछ न भी ले फिर भी चिन्ताकी कोई बात नहीं, क्योंकि धर्म हृदय परिवर्तन चाहता है, उसे दबावकी आवश्यकता नहीं। दबावसे लिये गये व्रत भारभूत हों गे और आत्मासे किये गये व्रत पूर्ण और कार्यकारी। कितने अवगुण छोड़ने चाहिए और कितने दिनों के लिए छोड़ने चाहिए, यह सीमा तो हो ही नहीं सकती क्यों कि अवगुण सारे ही त्याज्य हैं और सदैव त्याज्य हैं, किन्तु सारे मनुष्य सारे अवगुण सदाके लिये छोड़ दें, यह सम्भव नहीं है।

सारे मनुष्य सारे अवगुण छोड़ दें, यह हमारे सामने आदर्श तो होना चाहिए किन्तु आग्रह नहीं; क्योंकि कुछ मनुष्य कुछ अवगुण छोड़ते हैं तो वह भी बुरा नहीं, अत्युत्तम ही है। इसी प्रकार सदाके लिये छोड़ दें, यह भी आग्रह नहीं होना चाहिए; क्योंकि कुछ दिनके लिए छोड़ना भी उत्तम ही है। हां, हमें प्रयास यही करना चाहिए और आशा भी यही करनी चाहिये कि कुछ दिनके लिये छोड़ने वाला सदाके लिये छोड़नेको तत्पर हो और कुछ अवगुण छोड़नेवाला सारे अवगुण छोड़नेकी ओर बढ़े; इसी प्रकार व्यक्ति-व्यक्तिके क्रमसे सारा संसार अवगुणहीन हो जाये। जब तक ऐसा न हो, तब तक प्रयास अविरल चालू रखना चाहिये।

एक मनुष्यके एक अवगुण छोड़नेका अर्थ है—विश्व-महामानवके एक अंग के एक रोगका दूर होना। एक-एक मनुष्यके एक-एक अवगुणको छुड़ाते-छुड़ाते अर्थात् प्रत्येक अंगके प्रत्येक रोगको मिटाते-मिटाते संसारको निरोग बना देना, बस

यही अणुव्रती संघका प्रयास है। यह निरोगता एक वर्षके लिए टिकेगी तो सदाके लिए भी टिक सकेगी, एक वर्षके लिए रोगका दूर होना सदाके लिए दूर होनेका पूर्व लक्षण है और यह शुभ है।

अणुव्रती संघके इस व्यक्ति-विकासके प्रयाससे हमें विश्वास है कि अनैतिकता के गन्दे नालेमें गिरकर कराहती मानवता फिरसे अपने राज्य-सिंहासन मानव— हृदयको अलंकृत करेगी और मानव भी उसकी अर्चना करके अपनेको धन्य समझेगा।

मानवताके पुजारियोंको हम यह कहना चाहेंगे कि यदि आप खोई हुई मानवताके पुनः दर्शन करना चाहते हैं तो अणुव्रती संघके राजपथ पर आइये; क्योंकि मानवताका सबसे सीधा और उत्तम मार्ग यही है।

अणुव्रत-साहित्य

- अणुयुगमें अणुव्रत
- अणुव्रती संघका नकारात्मक दृष्टिकोण
- भौतिकवाद और अणुव्रती-संघ
- अणुव्रती संघका प्रवेश-द्वार
- विचारकोंकी दृष्टिमें अणुव्रत
- मानवताका मार्ग अणुव्रती संघ
- अणुव्रत-आन्दोलन और उसके प्रणेता, आदि

आदर्श साहित्य संघ

स र दा र श ह र (राजस्थान)

रैफिल आर्ट प्रेस ३१, बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्ता